॥ श्री जयदेव कृत दशावतार स्तोत्र ॥

जब-जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ता है, तब भगवान विष्णु धर्म की रक्षा और संतों के कल्याण के लिए अवतार लेते हैं।

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री जयदेव कृत दशावतार स्तोत्र ॥

प्रलय-पयोधि-जले धृतवानसि वेदं
विहित-वहित्र-चरित्रमखेदम्।
केशव धृत-मीन-शरीर! जय जगदीश हरे॥१॥

क्षितिरिह विपुलतरे तिष्ठति तव पृष्ठे
धरणि-धरण-किण-चक्र-गरिष्ठे।
केशव धृत-कूर्म-शरीर! जय जगदीश हरे॥२॥

वसति दशन-शिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलंक-कलेव निमग्ना।
केशव धृत-शूकर-रूप! जय जगदीश हरे॥३॥

तव कर-कमल-वरे नखमद्भुत-शृंगं
दलित-हिरण्यकशिपु-तनु-भृंगम्।
केशव धृत-नरहरि-रूप! जय जगदीश हरे॥४॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत-वामन
पद-नख-नीर-जनित-जन-पावन।
केशव धृत-वामन-रूप! जय जगदीश हरे॥५॥

क्षत्रिय-रुधिर-मये जगदपगत-पापं
स्नपयसि पयसि शमित-भवतापम्।
केशव धृत-भृगुपति-रूप! जय जगदीश हरे॥६॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति-कमनीयं
दशमुख-मौलि-बलिं रमणीयम्।
केशव धृत-राम-शरीर! जय जगदीश हरे॥७॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हल-हति-भीति-मिलित-यमुनाभम्।
केशव धृत-हलधर-रूप! जय जगदीश हरे॥८॥

निन्दसि यज्ञ-विधेरहह श्रुति-जातं
सदय-हृदय-दर्शित-पशुघातम्।
केशव धृत-बुद्ध-शरीर! जय जगदीश हरे॥९॥

म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम्।
केशव धृत-कल्कि-शरीर! जय जगदीश हरे॥१०॥

फलश्रुति

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम्।
केशव धृत-दशविध-रूप! जय जगदीश हरे॥

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"